कृष्णदेव प्रसाद

कृष्णदेव प्रसाद के जनम पटना सिटी के कमंगर, गली में 27 जून 1892 गें भेल हल। ई 1914 में एम.ए.आउ 1915 में बी०एल० कयलन। 14 नवम्बर 1954 में इनकर निधन भेल। इनका में समाज सुधार के भावना कूट-कूट के भरल हल। सरल-गलल रीति-रिवाज, कुप्रथा, चाल-चलन बदले वास्ते कई एक कविता लिखलन, जेकरा में व्यंग्य, चोट आउ रीति-रिवाज पर कड़ा परहार कइलन हे। 'बाँचि ले मोर पतिया' इनकर कविता संग्रह हे। 'चाँद' आउ 'जगउनी' कविता इनकर प्रतिनिधि कविता हे जे 1943 में पटना विश्वविद्यालय के इंटर सिलेबस में सामिल हल।

कृष्णदेव प्रसाद प्रकृति के जबरदस्त चितेरा हथ। प्रस्तुत फागुन कविता में फागुन के बेहतरीन चित्रण भेल हे। फागुन के ऐला पर सउँसे प्रकृति में मनमोहक छवि छलके लगऽ हे। देखके सबके मन मोहा जाहे।

फागुन

आइ गेलइ मास फगुनवा, निरमल स्वच्छ अकास।
पाते-पाते अमवा झबरइ मँजरिया,
कार तरु डरिया परास;
सिमरक लाल-लाल लल्हुआ सुहावन,
महुअक पसरइ सुवास।
आइ गेलइ मास फगुनवा, निरमल स्वच्छ अकास।।

सिरिस तागे-तागे फुलवा बसन्ती,
गुल-गुल कोमल विकास;
खेतवा में रबिअक छबिया छबीली,
बढ़वइ हियरा हुलास।

आइ गेलइ मास फगुनवा, निरमल स्वच्छ अकास ।।
रहिया खुल-खुल बिहुँसे असोकवा,
मोहे मन बिनुहि परयास;
बगिया काँटे-काँटे फुललइ गुलबवा,
सब तरु करइ हहास।
आइ गेलइ मास फगुनवा, निरमल स्वच्छ अकास ।।

बड़वो पिपड़वक कहलो न जा हइ,
पोकहा मंजरि टटहास;
कउआ-डेढ़कउआ चिल्ह ठनके,
रहि-रहि करे अटहास।
आइ गेलइ मास फगुनवा, निरमल स्वच्छ अकास ।।

तरु-तरु डाढ़े-डाढ़े चहके चिरइयाँ,
खाइ खेलि करइ विलास;
थिरकऽ हइ रहि-रहि के सुखद पवनमा,
रहि-रहि भरइ उसाँस।
आइ गेलइ मास फगुनवा, निरमल स्वच्छ अकास ।।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) फागुन महीना में अकास कइसन लगऽ हे ?
   (ख) फागुन महीना में आम आउ सेमर बिरिछ के रूप कइसन हो जाहे ?
   (ग) खेत-खरिहान के दिरिस राह-बटोही के कइसे परभावित करऽ हे ?
   (घ) बाग-बगइचा आउ चिरँई-चुरगी फागुन के अवइते काहे आन्द में डूब जा हथ ?

लिखित :

1. (क) नीचे लिखल पंक्ति के भाव लिखऽ :

रहिया खुल-खुल बिहुँसे असोकवा
मोहे मन बिनुहि परयास
बगिया काँटे-काँटे फुललइ गुलबवा
सब तरु करइ हहास

(ख) नीचे लिखल पँक्ति के व्याख्या करऽ :

तरु-तरु, डाढ़े-डाढ़े चहके चिरइयाँ,
खाइ खेलि करइ विलास;
थिरकऽ हइ रहि-रहि के सुखद पवनमा,
रहि-रहि भरइ उसाँस।

भासा-अध्ययन :

1. (क) फागुन कविता में इस्तेमाल सिल्प-सौन्दर्य के वरनन करऽ ।
   (ख) अप्पन समझ से फागुन मास के प्रकृति-चित्रन करऽ ।

योग्यता-विस्तार :

1. (क) फागुन मास पर अधारित कोई दूसर कवि के कविता के आठ पंक्ति लिखऽ ।
   (ख) सुवास : महुआ के सुवास सगरो पसर गेल। एही तरह से नीचे लिखल सबद से सार्थक वाक्य बनावऽ :
   निरमल, सुहावन, स्वच्छ, बसन्ती, छबीली, हुलास, हहास, अटहास, विलास, उसाँस ।

सब्दार्थ :

निरमल	—	साफ
स्वच्छ	—	साफ
अकास	—	असमान
कार	—	करिया
तरु	—	पेड़, दरखत
सिमरक	—	सेमर
लल्हुआ	—	कलि
सुवास	—	सुगंध
हुलास	—	खुसी
बिहुँसे	—	खिले, हँसे
हहास	—	तेज हवा
मंजरी	—	मोजर
अटहास	—	जोरदार हँसी, ठहाका ।

●●●